www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा वृद्धि से स्वार्थ परमार्थ का समन्वय

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रमाङ्क-२०२

*

लेखक

श्रीराम शर्मा आचार्य

*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक एवं मुद्रक

युग निर्माण योजना,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

*

१९८२

*

मूल्य-

पच्चीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा वृद्धि से स्वार्थ-परमार्थ का समन्वय

पृथ्वी का जीवन प्राणियों और वनस्पतियों में विभक्त है। दोनों एक दूसरे के पूरक और पोषक हैं। पृथ्वी पर घास-पात के रूप में छोटी वनस्पतियाँ और बड़े पौधों के रूप में झाड़ और वृक्ष बढ़ते हैं। प्राणियों को इन्हीं के सहारे जीवन धारण करने का अवसर मिलता है। पशु-पक्षी मनुष्य सभी घास-पात पर जीवित हैं। अन्न भी एक प्रकार की घास का बीज है। शाक-भाजी फल-पत्ते यह भी वनस्पति है। मनुष्य इन्हीं को खाकर जीवित रहते हैं। वनस्पतियों के अभाव में पशु-पक्षी मनुष्य कोई भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवित नहीं रह सकता। समुद्र और तालाबों में भी कई प्रकार की हल्के किस्म की घास पाई जाती है। प्रायः उसी पर जल-जन्तुओं का निर्वाह होता है। हिंस्र प्राणी माँस खाते पाये जाते हैं पर माँस में शक्ति भी वनस्पति से ही आती है। दूध की भी प्रथक सत्ता नहीं। पशु घास खाते हैं और वह घास ही दूध बन जाती है। ऐसे प्राणी इस संसार में अति स्वल्प मात्रा में ही होंगे जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से वनस्पतियों का अपने निर्वाह में कोई उपयोग न करते हों। पशु-पक्षियों से लेकर कीड़े-मकोड़ों तक इस या उस प्रकार वनस्पति के सहारे ही प्राण धारण किये हुए हैं। आस-पास में बरसने वाली सूर्य की किरणें और जमीन से उगने वाली वनस्पति ही जीवन के दो प्रधान आधार हैं। इस संसार में जितना वैभव, सौन्दर्य, जीवन, आनन्द दृष्टिगोचर होता है, उसे इन्हीं दो ईश्वरीय विभूतियों का अनुग्रह कहना चाहिए।

खाद्य रूप में वनस्पतियों का उपयोग प्रत्यक्ष है। इसके अतिरिक्त उनका अप्रत्यक्ष लाभ और भी बड़ा है। पौधे आक्सीजन वायु उगलते और कार्बनडॉयआक्साइड

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खाते हैं। मनुष्य व पशु कॉर्बन डायआक्साइड उगलते हैं और आक्सीजन खाते हैं। इस प्रकार मनुष्य पौधे की सांस पीकर और पौधे मनुष्यों की साँस पीकर जीवित रहते हैं। यह आदान-प्रदान इतना महत्वपूर्ण है जिसे खाद्य उपलब्धि से भी बढ़कर महत्व दिया जाना चाहिए। ससार में वृक्ष न रहें तो मनुष्यों की साँस द्वारा छोड़ी हुई तथा अन्य प्रकार से उत्पन्न हुई विषैली हवा से यह सारा वातावरण भर जायगा और फिर अपनी धरती पर एक भी प्राणी का जीवन संभव न रहेगा।

वस्तुओं के मूल्यांकनमें प्रायः हमसे भूल ही होती रहती है। धन-दौलत को महत्व दिया जाता है पर उनकी ओर ध्यान भी नहीं जाता, जिस पर हमारा जीवन निर्भर है। वनस्पति वर्ग को अपना जीवन साथी मानकर चलना चाहिए, और उन्हें सुविकसित स्थिति में रखना अपने ही हितसाधन का एक अति महत्वपूर्ण अंग मानना चाहिए। वनस्पति को तुच्छ न माना जाय, उसका महत्व समझा जाय और उसके अधिक उत्पादन, संवर्धन पर ध्यान दिया जाय।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जनसंख्या वृद्धि के कारण कल-कारखाने, निवास, सड़क आदि बनाने में बहुत-सी भूमि वनस्पति उत्पादन से रहित हो गई। घास उत्पन्न करने वाली भूमि अब दिन-दिन कम होती जा रही है। फलतः पशु पक्षियों के निर्वाह साधन घट रहे हैं और वे कम होते चले जाते हैं।

स्मरण रखा जाय कि पक्षी उन कीड़ों को खाते हैं जो फसल को नष्ट करते है। वे बीज खाते हैं और अपनी बीट द्वारा उन बीजों को दूर दूर तक पहुँचा कर इस धरती पर जहाँ तहाँ वृक्ष-झाड़-जड़ी बूटियों के बोने उपजाने की भूमिका निभाते हैं। पशुओं के मल मूत्र एवं अस्थि मांस से पृथ्वी को खाद मिलती और उपज बढ़ती है। अस्तु वनस्पति और पशु पक्षियों का सन्तुलन यथावत् बना रहना चाहिए अन्यथा जीवन संकट की विभीषिका सामने आ खड़ी होगी।

इन दिनों विना उपजाऊ जमीन को उपजाऊ बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं और ऊबड़ खाबड़ भूमि को समतल किया जा रहा है, फिर भी वह उपलब्धि इतनी नहीं है कि निवास व्यवस्था के उपयोग के लिए छिनी जमीन की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षतिपूर्ति हो सके। इन दिनों जंगल कट रहे हैं। कृषि के लिए जमीन चाहिए, इसीलिए जंगलों को साफ किया जा रहा है इससे वृक्षों की संख्या घट रही है, जलाने, भवन निर्माण एवं व्यवसायिक प्रयोजनों के लिए लकड़ी की माँग बढ़ रही है फलतः वृक्ष तेजी से कटते तो हैं पर उनकी स्थान पूर्ति नहीं होती। यह दुहरा संकट है। वृक्षों की कमी पड़ते जाने से उनके द्वारा लकड़ी की आवश्यकता पूरी होने में कठिनाई उत्पन्न होती है और उसकी मँहगाई बढ़ती है। पत्तियों के सड़ने से भूमि को खाद मिलता है। उनकी कमी से भूमि की उर्वरा शक्ति घटेगी। फलतः अन्न और घास-पात का उत्पादन कम पड़ने से मनुष्यों और पशुओं के लिए संकट खड़ा होता चला जायगा।

शुद्ध वायु की कमी पड़ते जाना इससे भी बड़ा संकट है। इस प्रकार वृक्षों को काटना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है। यदि उन्हें काटना ही पड़े तो आवश्यक है कि उतने ही नये लगा दिये जाँय। सच तो यह है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ वायु शुद्धि की आवश्यकता भी बढ़ेगी और उसकी पूर्ति मनुष्यों के अनुपात

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से ही वृक्षों की संख्या बढ़ाने से संभव हो सकती है। किन्तु हो उल्टा रहा है वृक्ष कटते और घटते जा रहे हैं। फलतः लकड़ी की आवश्यकता एवं भूमि के लिए प्राकृतिक खाद मिलने में भारी अड़चन उत्पन्न हो रही है। शुद्ध वायु का बढ़ता संकट तो इससे भी अधिक बढ़-चढ़कर है।

वृक्ष घटने से संकट के और भी कई दुष्परिणाम हैं, जिनके कारण अगले दिनों भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वृक्षों की जड़ें जमीन में फैलती हैं और भूमि की परतों को रस्सों से कसने की तरह जकड़े रहती हैं। इससे भूमि रेत बनकर हवा में उड़ने से रुकती है और वर्षा के बहाव में कटने से भी बचती है। यदि पेड़ न रहें तो जड़ों द्वारा भूमि की परतें जकड़े रहने की सुरक्षा समाप्त हो जायेगी और हर वर्षा में उपजाऊ मिट्टी बह-बह कर नदी नालों के सहारे समुद्र की ओर लुढ़कती जायगी। इसी प्रकार हवा के तेज झोंके भूमि को झकझोरेंगे और कड़ी जमीन को रेत के रूप में परिणित करने तथा आँधी के साथ इधर-उधर उड़ा ले जाकर हानि पहुँचाते रहेंगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन क्षेत्रों में पहले पेड़ थे तब वहाँ की भूमि बहुत अच्छी और उपजाऊ थी, पर जब वहाँ के पेड़ कट गए तो धीरे-धीरे वहाँ की उर्वरता घट गई और रेतीले रेगिस्तान दिखाई देने लगे। खाद मिलते रहने के कारण भूमि की ऊपरी परतें ही उपजाऊ होती हैं। वह पानी में बहने और हवा में उड़ने लगेगी तो निश्चित रूप से रेतीली एवं अनुत्पादक भूमि ही बढ़ेगी। उर्वरता के अभाव में मनुष्यों और पशुओं को भारी संकट का सामना करना पड़ेगा।

वृक्षों का वर्षा से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनमें एक विशेष आकर्षण शक्ति होती है जिससे बादल खिचकर आते और पानी बरसाते हैं। जहाँ वृक्ष कटे हैं वहाँ उसी अनुपात से वर्षा भी घटेगी। ऐसे अनेक क्षेत्र है जहाँ उन हरे-भरे प्रदेशों में काफी वर्षा होती थी परन्तु जब उधर वृक्ष कट गये और नंगी भूमि रह गई तो वर्षा की भारी कमी पड़ गई है और वे क्षेत्र सूखाग्रस्त होने के कारण विपत्ति में फँस गए। वृक्ष काटकर जो लाभ उठाया गया था उसकी तुलनामें वनस्पति और वर्षा की कमी पड़ जाने की हानि अनेक गुनी कष्टदायक बनकर सामने आई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक ओर भूमि का अन्य उपयोग करने के लिए तथा लकड़ी की आवश्यकता पूरी करने के लिए वृक्षों का काटना आवश्यक है । दूसरी ओर उस कमी से शुद्ध वायु का संकट—पत्तियों से खाद मिलने की कमी—पक्षियों का आश्रय स्थल घटने से उनका विनाश, फलतः फसल शत्रु कीड़ों की वृद्धि जैसी कितनी ही कठिनाइयाँ सामने आती हैं । जड़ों द्वारा न पकड़े न रहने से भूमि कटती और हवा में उड़ती है । वर्षा की कमी पड़ने से वे क्षेत्र सूखाग्रस्त होकर दुर्भिक्ष की स्थिति में पहुंचते हैं । साँप-छछूंदर जैसी स्थिति है । पेड़ काटे बिना काम भी नहीं चलता और काटने पर उसकी हानि इतनी होती है जिसकी तुलना में लाभ की उपयोगिता निरर्थक बनकर रह जाती है ।

इस संकट का सामना करने का उपाय एक ही है कि नये वृक्ष लगाने का उत्साह उत्पन्न किया जाय और उसमें हर मनुष्य को पूरी-पूरी दिलचस्पी बनी रहे । यदि उत्साह हो तो उसे कार्यान्वित करना कुछ भी कठिन नहीं है । कृषि में प्रयुक्त होने वाली भूमि के अतिरिक्त भी जहाँ तहाँ ऐसी जमीन पर्याप्त मात्रा में रहती है

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसमें वृक्ष उगाये जा सकते हैं।

सरकार वनभूमि को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करती है और सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने जैसे प्रयास करती है पर इतना वड़ा कार्य सरकार पर छोड़ देने से निश्चिन्त नहीं रहा जा सकता है। इसके लिए जन साधारण में व्यक्तिगत रूप से अभिरुचि उत्पन्न करनी चाहिए और हरितिमा अभिवर्धन में अपना उत्साह भरा प्रयास प्रस्तुत करना चाहिए। वृक्षारोपण हमारी महत्वाकांक्षाओं में सम्मिलित रहना चाहिए। जिस प्रकार अपना व्यवसाय धन सम्मान प्रभाव यश आदि बढ़ाने में उत्साह रहता है वैसी ही श्रेयस्कर सफलताओं में एक हरितिमा अभिवर्धन एवं वृक्षारोपण को भी सम्मिलित रखना चाहिए।

शोभा सौन्दर्य: कला और सुसज्जा की दृष्टि से घर आँगन में फूल और वेलें लगाने का उत्साह उत्पन्न करना चाहिए। यह प्रयास वस्तुतः बहुत ही सुरुचिपूर्ण हैं। घर आँगन में, बरामदे के आस-पास आम तौर से थोड़ी बहुत कच्ची जमीन रहती है, उसमें फूल लगाये जा सकते हैं। खम्भों के सहारे छतों छप्परों पर बेलें चढ़ाई जा सकती

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं और अपना घर प्राकृतिक शोभा सुषमा से सुसज्जित बनाया जा सकता है।

बड़े शहर कस्बों में जगह की कमी पड़ती है वहाँ छत आंगन सभी भरे होते हैं। इस स्थिति में गमलों का स्तेमाल किया जा सकता है। मिट्टी, सीमेन्ट के गमले बाजार में बिकते हैं। पुराने डिब्बे, कनस्तर काट-छाँकर उन्हें ऊपर से रंग-पोत दिया जाय तो अच्छे खासे गमले बन सकते हैं। पैकिंग में आने वाली लकड़ी की पेटियाँ भी काम दे सकती हैं, यहाँ तक कि नाँद या टूटे घड़े के पेंदे भी इस प्रयोजन को पूरा कर सकते हैं। उनमें मिटटी भरली जाय—थोड़ा खाद डाला जाय फूलों के पौधे और बेलें उन्हीं में आसानी से बोये जा सकते हैं। उनकी सिचाई रखवाली पर ध्यान रखा जा सके तो अपना घर हरियाली से सुशोभित और रंग-बिरंगे फूलों से सुसज्जित दिखाई पड़ सकता है। इसमें न तो कोई बड़ा खर्च करना है और न भारी परिश्रम। सच तो यह है कि यह एक ऐसा मनो-रंजन हैं, जिसमें अपनी सृजनात्मक शक्ति, कुशल बुद्धि एवं कलात्मक दृष्टि का विकास होता है। श्रम करने का नया

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आधार मिलने से आलस्य प्रमाद के रूप में छाई रहने वाली दरिद्रता से भी छुटकारा मिलता है। जागरुकता, स्फूर्ति एवं कुछ करने की उमंग न केवल अपने में वरन् पूरे परिवार में उत्पन्न की जा सकती है। बच्चों को ऐसे कार्यों में स्वभावतः उत्साह रहता है। यदि उन्हें इस दिशा में प्रोत्साहन एव मार्गदर्शन दिया जा सके तो सहज ही वे अपने लिए एक सृजनात्मक कार्य प्राप्त कर लेंगे और तोड़-फोड़ की अव्यवस्था फैलाने से बचेंगे।

फूल-बेलों की तरह ही घरों में शाक वाटिका लगाई जा सकती हैं। जिनके पास कच्ची खाली जगह है वे उसमें ऋतु के अनुरूप शाक-भाजी बो लिया करें। जिनके घरों में पक्की जगह है वे गमले, टोकरियाँ, पेटियाँ इस्तेमाल कर सकते हैं। हाथ की उगाई वस्तुओं के प्रयोग में एक भावनात्मक आनन्द होता है। छतों का पूरा स्तेमाल किया जा सके तो पक्के घरों में भी इतनी सब्जी उगाई जा सकती है जिससे किसी छोटी गृहस्थी का काम भली प्रकार चल सके। यह बचत भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। सबसे बड़ा लाभ परिवार के लोगों में सृजनात्मक क्षमता का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विकास होना है जिसका मूल्य शाक भाजी उगाने के सहारे मिलने वाले आर्थिक लाभ से भी कहीं अधिक है।

अदरक, हरीमिर्च, टमाटर, पोदीना, धनिया, पालक जैसी चटनी के काम आने वाली वस्तुयें तो हर महीने हर मौसम में दो-चार गमलों में ही उगी रह सकती हैं और उनके सहारे अपने उत्पादन का गर्व तथा आनन्द सदा ही मिलता रह सकता है। इतना तो हर व्यक्ति कर सकता है। जिनके पास भूमि नहीं है जो नौकरी व्यवसाय आदि में व्यस्त रहते हैं उनके लिए भी वनस्पति उत्पादनमें इतना योगदान तो बड़ी आसानी से संभव हो सकता है।

जिनके पास भूमि है, वे उसका अन्यमनस्क होकर उपयोग न करें वरन् यह दृष्टि रखें कि इसमें अधिकाधिक हरितिमा का उत्पादन करना है। अन्न-शाक, तिलहन, कपास आदि की फसलें किस प्रकार अधिक मात्रा,में उपजा सकते हैं, इसी के लिए उनका चिन्तन और प्रयास उत्साह पूर्ण स्थिति में रहना चाहिए। इस क्षेत्र में भूमिधरों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा चलनी चाहिए कि किसका पुरुषार्थ अग्रणी रहा। अधिक शस्य सम्पदा का अनुदान कितना किस स्तर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का किसने रखा, इसे प्रतिष्ठा और प्रतिस्पर्धा का बिषय बनाना चाहिए और इस घुड़दौड़ में बाजी मारने की महत्वाकांक्षा हर किसी में जागनी चाहिए।

समुचित जुताई, सिंचाई, खाद, बीज और रखवाली का जागरुक पुरुषार्थ उत्साह और तत्परता के साथ इस क्षेत्र में जुट पड़ें तो हमारी फसलों का परिमाण और स्तर आज की अपेक्षा कल ही दूना हो सकता है। उस श्रम-यज्ञ का परिणाम यह होगा कि पशुओं और मनुष्यों को अधिक खाद्य प्राप्त करने और परिपुष्ट होने का अवसर मिलेगा। यह पुण्य परमार्थ अपने लिए भी तत्काल सत्परिणाम उपस्थित करेगा अधिक मेहनत से अधिक कमाई होगी और पुरुषार्थी को आत्म सन्तोष अनुभव करने सराहना पाने सम्पन्न बनने का अवसर मिलेगा।

जो स्वयं कृषि नहीं कर सकते, उसे जिन तिस को भाड़े, बटाई पर देते फिरते हैं उनके लिए यही उचित है कि इस प्रकार धरित्री की उत्पादन क्षमता में उपेक्षा अवरोध उत्पन्न न करें और उसे उनके हाथ बेच दें जो उसमें पूरा ध्यान और पूरा श्रम नियोजित कर सकने की स्थिति

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में हैं। इससे अधिक हरितिमा उत्पादन करने का पथ प्रशस्त होगा। किसान को मात्र अन्न ही नहीं शाक और फल उगाने की बात भी सोचनी चाहिए। मानवी आवश्यकताओंमें शाकों और फलों का भी अति महत्व है। कृषि भूमि का एक भाग फल-शाक उगाने और फलों का छोटा उद्यान लगाने के लिए भी सुरक्षित रखा जाय। जिस प्रकार गौ पालन करके परिवार के स्वास्थ्य संरक्षण की व्यवस्था बनाई जाती है, ठीक उसी प्रकार शाक और फलों को आवश्यक मात्रा घर के लोगों को मिलती रहे यह ध्यान रखने योग्य बात है। अन्न और दूध की ही तरह, शाक फल भी भोजन के आवश्यक अंग हैं। यदि यह तथ्य समझ लिया जाय तो हर कृषक को इतने उत्पादन में भी अनाज कपास तिलहन आदि उगाने की तरह अभिरुचि उत्पन्न होगी। यह उत्पादन आर्थिक दृष्टि से भी अधिक लाभदायक है। कठिनाई केवल इतनी ही है कि ढर्रे पर पहिया लुढ़काने का मानसिक आलस्य जो चल रहा है उसी को चलने देने की आदत बनाये रहते हैं और सोचने तथा करने की उमंग को फलवती नहीं होने देते।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भोजन में कई तरह की वस्तुएँ रहने की तरह यदि कृषि उत्पादन में भी शाकों और फलों का उत्पादन आवश्यक मान लिया जाय तो आज की अपेक्षा कल स्थिति ही दूसरी होगी। उत्पादक धनी बनेंगे, अपने परिवार की स्वास्थ्य वृद्धि करेंगे और उस उपयोगी उपज से अनेकों को लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा।

जलाऊ ईंधन, इमारत तथा उपकरणों के लिए लकड़ी की जरूरत किसान की ही तरह उनको भी पड़ती है, जिनके पास जमीन नहीं है। अस्तु जो जमीन कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है उस पर जलाऊ लकड़ी के पेड़ लगाए जाँय। इससे भूमि का शोभा सौन्दर्य बढ़ेगा। और उसे हवा पानी के दबाव से नष्ट न होने एवं अधिक वर्षा पाने का लाभ मिलेगा और मनुष्यों एवं पशु पक्षियों की कई तरह की आवश्यकताएँ पूरी होंगी। खेतों पर भी पशुओं, मनुष्यों को छाँह पाने के लिए आश्रय की आवश्यकता पड़ती है। उसकी पूर्ति के लिए आम, जामुन, शहतूत, कटहल जैसे अधिक छाया और अधिक फल देते रहने वाले वृक्ष लग सकते हैं। इनसे जगह तो घिरती है पर बिना

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिचाई, जुताई के सहज ही फलों की आमदनी भी तो होती रहती है। इस प्रकार फलदार वृक्षों का लगाना और घटिया जमीन में जलाऊ या इमारती पेड़ उगाना लगभग उतना ही लाभदायक जा पहुंचता है जितना कि कृषि की उपज होती है। यदि कुछ कम भी रहे तो भी वृक्ष की बहुमुखी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए उनके उत्पादन को ध्यान में रखा जाना और महत्व दिया जाना आवश्यक है।

युग निर्माण प्रेस, मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानव जाति के समक्ष प्रस्तुत विक्षोभों एवं असन्तुलनों का एक सबसे बड़ा कारण है– वृक्ष सम्पदा का कटते जाना। इन्हें दूर करने के लिए व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण का अभियान चलना चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

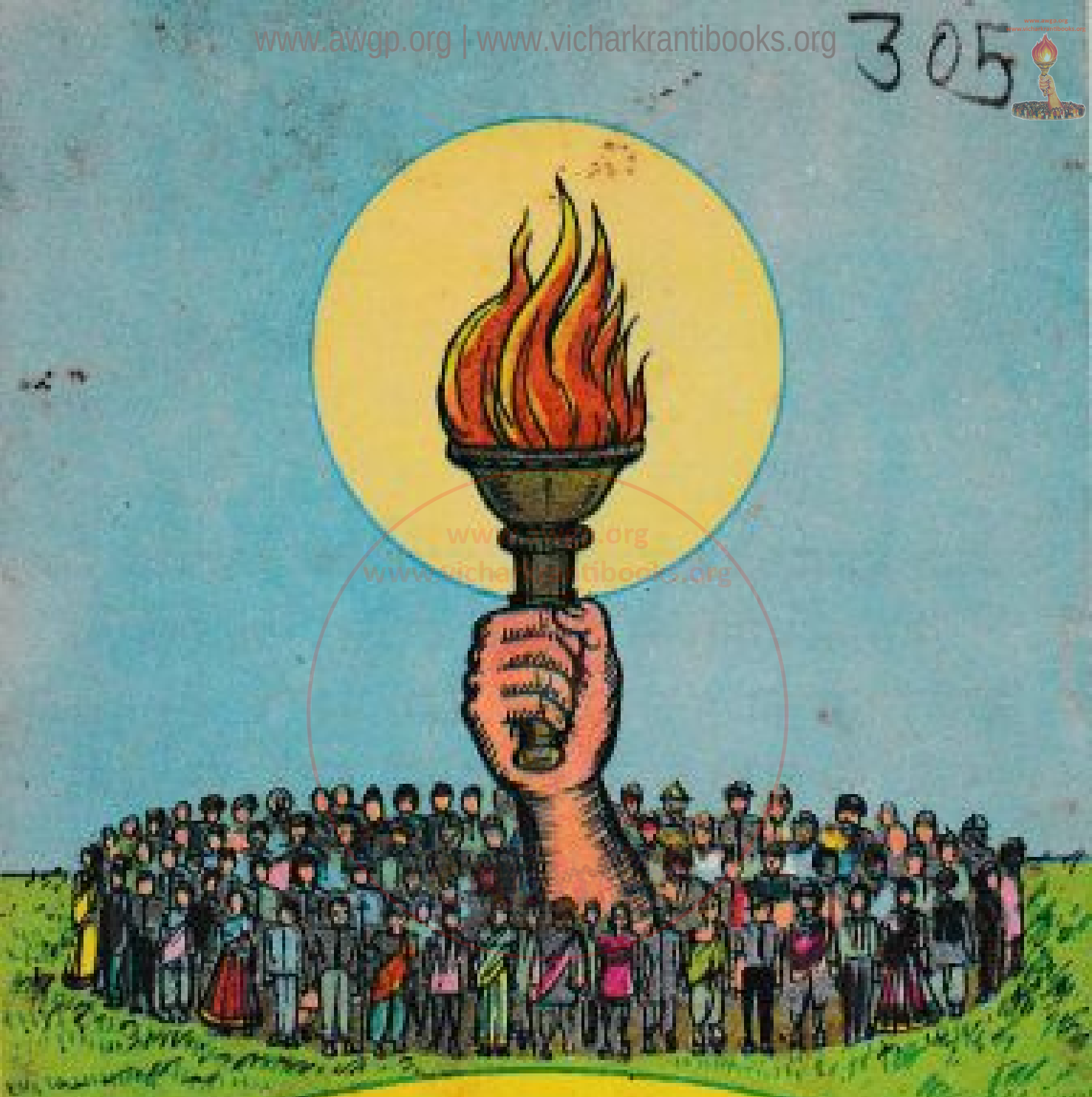

305

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि - मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Printed by